विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४९, फाल्गुन पूर्णिमा, १४ मार्च, २००६ वर्ष ३५ अंक ९

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

धम्मवाणी

न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि, योनिजं मत्तिसम्भवं।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥

सुत्तनिपातपाळि- (६२५), ९.२७ वासेट्ठसुत्तं

किसी माता की योनि से उत्पन्न होने के कारण मैं किसी को ब्राह्मण नहीं कहता। मैं ब्राह्मण उसे कहता हूं जो अपरिग्रही है, अनासक्त है।

हमारी उदात्त संस्कृति

किसी ने मुझे 'विश्व हिंदू परिषद' के अध्यक्ष श्री अशोक सिंहलजी द्वारा लिखित पुस्तक **"श्रीमद्भगवतगीता ही आदि मनुस्मृति"** की एक प्रति भेजी। पढ़ कर मन आह्लादित हो उठा। आजकल की प्रचलित मनुस्मृति को उनके द्वारा अस्वीकृत किया गया, यही अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण बात थी।

सचमुच यह 'मनुस्मृति' ही एक ऐसी पुस्तक है जिसके कारण भारत के दो बड़े समुदायों में इतना बड़ा कटुतापूर्ण विग्रह उठ खड़ा हुआ, जिससे देश की बहुत बड़ी हानि हुई। इसके कारण ही भारतरत्न बाबासाहेब अंबेडकर को इस पुस्तक को सार्वजनिक रूप से जलाने का निर्णय लेना पड़ा।

श्री सिंहलजी द्वारा वर्तमान मनुस्मृति को नकारा जाना ही मेरे लिए उल्लास का कारण बना। उनकी उपरोक्त पुस्तक पढ़ कर मेरे निकट संपर्क में आने वाले 'विश्व हिंदू परिषद' के सहसचिव विपश्यी साधक श्री बालकृष्ण नायक को मैंने जो पत्र लिखा, उसका मुख्य अंश इस प्रकार है: –

लोक-प्रचलित 'मनुस्मृति' ने हमारे समाज में ऊंच-नीच का जो अमानुषिक, अनैतिक और अधार्मिक विभाजन का गर्हित विधान प्रस्तुत किया, उसे मन-ही-मन गलत समझते हुए भी अपने यहां का कोई नेता खुल कर इसका विरोध नहीं कर सका। कम-से-कम ऐसा मेरे देखने में तो नहीं आया। बल्कि अपने यहां के एक शीर्षस्थ नेता ने तो इसे लोगों की भावना का प्रतीक बताया और इस प्रकार इसे न्यायपूर्ण और मान्य सिद्ध करना चाहा, जो कि मुझे अत्यंत अनुचित ही नहीं, दुःखद प्रतीत हुआ। श्री अशोक सिंहलजी ने इस दिशा में सही कदम उठाया है और मौजूदा मनुस्मृति को गलत साबित कर, समाज-कल्याण का अत्यंत प्रशंसनीय काम किया है।

किसी विशिष्ट जाति की माता की कोख से जन्म लेने मात्र से किसी व्यक्ति को उच्च और महान मान कर पूजें, भले वह तमोगुणी हो और निकृष्ट कर्मी हो और किसी अन्य जाति की मां की कोख से जन्म लेने मात्र से किसी व्यक्ति को नीच और अस्पृश्य मानें, भले वह सतोगुणी हो और उत्कृष्ट कर्मी हो। यह विचारधारा हमारी गौरवमयी उदात्त मानवी संस्कृति की धवल विमल चादर पर ऐसी कलंक-कालिमा है जो किसी भी राष्ट्रप्रेमी का सिर लज्जा से नीचा करती है। इस कलंक-कालिमा को दूर किए बिना हम अपना सिर ऊंचा नहीं उठा सकते।

यह कितनी अमानुषिक विचारधारा है कि किसी पालतू कुत्ते, बिल्ली, गाय, बैल और घोड़े आदि पशु को अथवा तोता, मैना आदि पक्षी को छू कर, सहला कर, पुचकार कर, थपथपा कर हम अपवित्र नहीं हो जाते, परंतु नहा-धो कर स्वच्छ हुए और सदाचार का जीवन जीते हुए किसी मानवपुत्र को छूने से ही नहीं, उसकी छाया पड़ने से भी हम अपवित्र हो जाते हैं। इन पशु-पक्षियों के प्रवेश से हमारे मंदिर, देवालय अपवित्र नहीं हो जाते, परंतु एक स्वच्छ मानवपुत्र के प्रवेश से अपवित्र हो जाते हैं। यह कैसी विडंबनाभरी विकृत मानसिकता है। इसके रहते हम कैसे गर्व कर सकते हैं अपनी गौरवमयी उदात्त संस्कृति पर!

गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरित मानस और कवितावली जैसे ग्रंथों की रचना करके जैसे सारे समाज का, वैसे ही मेरा भी बहुत बड़ा कल्याण किया। इन ग्रंथों के पावन पात्रों का जो अनुपम चरित्र चित्रण किया वे देश की गौरवमय पुरातन संस्कृति के उत्कृष्ट आदर्श हैं। इस साहित्य ने देश के करोड़ों लोगों के हृदय पर जो अमिट छाप छोड़ी, वही मेरे मानस पटल पर भी आज तक अंकित है और सदैव अंकित रहेगी। परंतु राम-कथा की दो बातों ने मेरे मानस को बुरी तरह झकझोरा और व्यथित किया था।

उनमें एक तो यह थी कि निरपराध सीतामाता को गर्भावस्था में, बिना किसी सेविका को साथ दिए और बिना किसी आजीविका का प्रबंध किए, हिंसक पशुओं से भरे वन में निर्दयतापूर्वक अकेली छोड़ दिया जाना। मुझे याद है कि इसे पढ़-सुन कर मैं बहुत व्यथित हुआ था। मेरा भावुक हृदय इस अमानुसिक घटना की कल्पना मात्र से सिहर उठता था। इसे सहन नहीं कर पाता था। उस समय के मेरे आदरणीय गुरुदेव ने मुझे यह कह कर शांत किया था कि यह वास्तविक घटना नहीं है। भगवान राम की पावन कथा में यह घटना बाद में जोड़ी गयी है। इसे सुन कर मैं कुछ आश्वस्त तो हुआ, परंतु फिर भी यह नहीं समझ पाया कि ऐसी गलत बात देश के सभी रामभक्तों ने स्वीकार कैसे कर ली?

दूसरी बात जिसने मुझे अत्यंत विचलित किया वह थी

तुलसीदासजी की यह चौपाई –

पूजेहि विप्र शीलगुणहीना। तदपि न शूद्र गुणज्ञान प्रवीणा॥

मेरी प्रारंभिक पाठशाला के गुरुदेव पढ़ाई आरंभ करने के पूर्व हमसे प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना करवाते थे। इसके बोल थे –

हे प्रभो आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हम से कीजिए॥
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें॥

उन्होंने अत्यंत कृपापूर्वक हमें सिखाया था कि सदाचरण और सद्गुणमय जीवन ही धर्माचरण है। प्रार्थना के उपरोक्त पद को मैं अपने नित्य प्रति के प्रातःकालीन भजनों में भी प्रमुख स्थान देता था। अतः जब पढ़ा कि बिना शील गुण के भी कोई पूज्य हो सकता है और शीलवान और गुणवान हो तो भी अपूज्य, तब उन दिनों की बालसुलभ बुद्धि को यह कथन बहुत अटपटा लगा। परंतु इस शंका का भी समाधान करते हुए मेरे गुरुदेव ने समझाया कि यह तुलसीदासजी की अपनी वाणी नहीं है। किसी अन्य व्यक्ति ने इसे रामचरित मानस में जोड़ दी है। इसे महत्त्व नहीं देना चाहिए। मेरे गुरुदेव स्वयं विप्र थे। शील, सदाचार और सद्गुण संपन्न थे। मेरे लिए परम पूज्य थे। अतः उनके कहने पर उन दिनों मेरे लिए इस पद का कोई विशेष महत्त्व नहीं रह गया था।

परंतु आगे जाकर युवावस्था में हिंदी साहित्य का गंभीर अध्ययन किया और हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्री रामचंद्र शुक्ल का 'तुलसीदास' नामक आलोचना ग्रंथ पढ़ा तब जाना कि यह पूर्व काल से चली आ रही मान्यता है। उन्होंने चाणक्य नीति के इस श्लोक को उद्धृत किया –

पतितो पि द्विजः श्रेष्ठः, न च शूद्रो जितेन्द्रियः।

इसके साथ-साथ महर्षि दयानन्दजी सरस्वती के 'सत्यार्थ प्रकाश' में भी देखा कि यही श्लोक पाराशर स्मृति में भी दिया गया है। और देखा कि मनुस्मृति तो ऐसी धर्म-विरोधी विचारधारा से भरी पड़ी है। यही नहीं अपने यहां के अनेक पुराणों और स्मृति ग्रंथों में कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी प्रसंग में यही दूषित विचारधारा मुखरित हुई है। तब लगा कि जैसे पूज्य राष्ट्रकवि मैथिलीशरणजी ने ठीक ही कहा –

नर कृत शास्त्रों के सब बंधन, हैं नारी ही को लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएं, पहले से कर बैठे नर॥

तब मन में यह भाव उठा कि इसी लहजे में मुझको भी यह कह देना चाहिए –

विप्र रचित शास्त्रों के बंधन, हैं शूद्रों को ही लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएं, पहले से निश्चित ली कर॥

केवल इन धर्म-ग्रंथों में ही नहीं प्रत्युत जब हमारे समाज के व्यावहारिक जीवन में भी ऊंच-नीच और स्पृश्य-अस्पृश्य की घोर अमानवीय विषमता देखी, तब तो मेरे अंतर मन से यह विद्रोहभरी कविता फूट पड़ी –

ब्राह्मण बनिये के घर जन्मे, इससे ही क्या हम हैं महान?
हम उच्च वर्ण, हम सर्वश्रेष्ठ, ऊंचा समाज में बना स्थान॥
चाहे हों अनपढ़ निपट मूर्ख, फिर भी पंडितजी कहलाएं।
चाहे हों कामी कुटिल किंतु, धर्मावतार का पद पाएं॥
पुरखों से उनके पल्ले, सेवा का ही भार दिया हमने।
वे भोले मूक मनुज उनसे, क्या-क्या ना काम लिया हमने?
वे हैं अछूत अस्पृश्य नीच, उनको समाज में नहीं स्थान।
वे जन्मजात पददलित रहें, उनका कैसा मानापमान?
हम उच्च वर्ण हैं, अतः सुरक्षित है हमको सर्वाधिकार।
मंदिर देवालय धर्मस्थान, ईश्वर तक पर एकाधिकार॥
सब कूएं बावड़ी अपने हैं, सड़कों तक पर चलने ना दें।
यदि वश चल जाये तो उनको, हम पृथ्वी पवन न छूने दें॥
मैं पूछ रहा आखिर यह सब, किस न्याय-नीति के बल पर है?
हम बनें धर्म के कर्णधार, पर अनाचार में तत्पर हैं॥
मैं सोचा करता कभी-कभी, क्या परमेश्वर भी मिथ्या है?
वह मूक, बधिर-सा रहे देखता, यहां हो रहा क्या-क्या है?
हम इतना अत्याचार करें, निकले उसकी आवाज नहीं।
धरती न फटे, नभ ना टूटे, गिरती हम पर क्यों गाज नहीं?
वह ईश नहीं, जगदीश नहीं, वह सच्चा धर्म पुराण नहीं।
जिसके आदेशों में मानव को, है समता का स्थान नहीं॥

मेरे मानस में ये विद्रोहभरे भाव ३१ वर्ष की उम्र में भगवान बुद्ध की शिक्षा के संपर्क में आने के वर्षों पहले उमड़े थे। भगवान बुद्ध की साधना के बाद जब पहली बार उनकी वाणी में से गुजरा तब यह पढ़ कर भाव विभोर हो उठा –

न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मुना वसलो होति, कम्मुना होति ब्राह्मणो॥

–न जन्म से कोई वृषल (चांडाल) होता है न ही जन्म से कोई ब्राह्मण होता है। कर्म से ही कोई वृषल (चांडाल) होता है, कर्म से ही होता है ब्राह्मण।

इसे पढ़ते ही भारत की वास्तविक पुरातन गौरवमयी उदात्त संस्कृति के दर्शन हुए।

अपने धर्म-ग्रंथों में कितनी उदात्त भावनाएं भरी हुई हैं। परंतु उनमें कहीं-कहींऐसी गंदगी भी बिखरी पड़ी हैं जो उनकी महानता को धूल-धूसरित कर देती हैं। कोई-कोईपुस्तक तो पूरी की पूरी अधार्मिक वक्तव्यों से ही भरी है। स्वर्गीय श्री शेषाद्रीजी से इस विषय में बहुत देर तक बातें होती रहती थीं। उन्होंने स्वीकार किया कि कल्कि पुराणके प्रकाशन और वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया जाय। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया था कि अपने धर्म-ग्रंथों में जहां-जहां भगवान बुद्ध अथवा उनकी शिक्षा के बारे में मिथ्या लांछन लगाए हैं, उन्हें क्षेपक कह कर निकाल दिया जाय।

इसी प्रकार राष्ट्रहित के लिए उचित यही है कि आधुनिक काल में प्रचलित मनुस्मृति के प्रकाशन और वितरण पर रोक लगा दी जाय और अपने धर्म-ग्रंथों में जहां-जहां जात-पांत को, ऊंच-नीच को, छूत-अछूत को बढ़ावा देने का वर्णन है अथवा जो भी अन्य अशोभनीय धर्मविरोधी वर्णन हैं, उन्हें क्षेपक कह कर निकाल दिया जाय। निकाल न सकें तो आम जनता तक यह संदेश तो पहुँचे कि

हमारे धर्म-ग्रंथों में ये जो अनुचित बातें आई हैं वे सब क्षेपक हैं। हमें मान्य नहीं है। श्री सिंहलजी ने बिल्कुल ठीक लिखा है कि पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में तथा तत्पश्चात, धर्म के नाम पर ऐसे साहित्य की रचना हुई जो हमारी गौरवमयी संस्कृति के लिए शोभनीय नहीं हैं।

श्री सिंहलजी की पुस्तक पढ़ कर मेरे मन में जो आह्लाद उमड़ा उसका कारण यही था कि हमारे देश के एक प्रतिष्ठित नेता द्वारा किसी गलत मान्यता को सुधारने की एक सही प्रकार की पहल तो हुई। मैं यह भी खूब समझता हूं कि कुछ कट्टरपंथी लोग उनका विरोध भी करेंगे। ऐसे विरोध का सामना श्री सिंहलजी जैसा सबल नेता ही कर सकता है। समाज और राष्ट्र को जोड़े रखने के लिए, उसे बलवान बनाने के लिए इस प्रकार के अन्य अनेक लोकहितकारी कदम उठाने आवश्यक हैं। इस दिशा में यह जो महत्त्वपूर्ण पहला कदम उठा है वह अत्यंत सराहनीय है। इस कल्याणकारी पहल को बढ़ावा मिले, इस निमित्त मेरी प्रबल मंगल कामना है, सुभाशिष है।

सत्यनारायण गोयन्का.

म्यंमा में दीर्घ-शिविर केंद्र की स्थापना

दीर्घ शिविरों के लिए लगभग २२ एकड़ की शांत, नीरव भूमि का दान मिला है। यहां यांगों (रंगून) तथा बगो से आसानी से पहुँचा जा सकता है। केंद्र की जमीन पर काजू के अनेक वृक्ष हैं। वर्षाकाल में यहां से एक सुहाना जलश्रोत बहता है। पूज्य गुरुजी ने इसे 'धम्मनिधि' (धर्म की संपत्ति) नाम से संबोधित किया है।

विपश्यना विशोधन विन्यास के नए प्रकाशन, डी.वी.डी. एवं सी.डी.

हिंदी

१. केंद्रीय कारागृह, जयपुर; विपश्यना का प्रथम जेल शिविर
२. विपश्यना लोकमत भाग १
३. विपश्यना लोकमत भाग २
४. अग्रपाल राजवैद्य जीवक

गुजराती

१. निर्मल धारा धर्म की
२. मंगल जगे गृही जीवन में

तमिल प्रकाशन

१. द डिस्कोर्स समरीज
२. द ग्रेसियस फ्लो ऑफ धम्म

डी.वी.डी.

१. विपस्सना इन प्रैक्टिस (अंग्रेजी)
२. म्यंमा यात्रा २००० (अंग्रेजी)
३. विपस्सनाः आर्ट आफ लिविंग (हिंदी)
४. धारण करे सो धर्म (हिंदी)
५. विपश्यना एवं इस्लाम (हिंदी)
६. विपस्सना एंड साइकीऑट्री (अंग्रेजी)

वीडियो सी.डी.

१. धारण करे सो धर्म (हिंदी)
२. विपश्यना एवं इस्लाम (हिंदी)
३. विपस्सना एंड साइकीऑट्री (अंग्रेजी)

ऑडियो सी.डी.

१. सामूहिक साधना, देहरादून (हिंदी-अंग्रेजी)
२. सामूहिक साधना, मैकलोडगंज (अंग्रेजी)
३. धम्मचक्कपवत्तनसुत्त (पालि-हिंदी)
४. धम्मचक्कपवत्तनसुत्त (पालि-अंग्रेजी)

श्रीलंका की धर्मयात्रा

आगामी २५५०वीं बुद्धजयंती के शुभ अवसर पर श्रीलंका सरकार अपने यहां १५ से १९ मई, २००६ तक राष्ट्रीय स्तर पर **अंतर्राष्ट्रीय बुद्धिस्ट कान्फरेंस** का आयोजन कर रही है। इसके लिए श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री महिंद राजपक्ष ने विश्व विपश्यनाचार्य पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायणजी गोयन्का को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है। इस महोत्सव में पूज्य गुरुदेव को श्रीलंका सरकार द्वारा **विशिष्ट रूप से सम्मानित** किया जायगा। पूज्य गुरुजी ने श्रीलंका सरकार का यह आमंत्रण सहर्ष स्वीकार करते हुए इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने का स्वीकृति पत्र भेज दिया है। कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र **खेत्तरामा इटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, कोलंबो** में १५ मई की सायं ३ से ७ बजे तक होगा।

इन्हीं कार्यक्रमों के आसपास श्रीलंका के सुप्रीम कोर्ट के जज श्री सरथ एन. सिल्वा एवं सम्बोधि महाविहारय के विहाराधिपति भदंत दरणगामा कुशलधम्म ने वहां एक विपश्यना शिविर लगाने के लिए भी आमंत्रित किया है ताकि लोग भगवान बुद्ध की वास्तविक शिक्षा का अभ्यास करके उसके व्यावहारिक पक्ष से भी अवगत हो सकें। पूज्य गुरुजी ने इस शिविर की भी अनुमति दे दी है। इस शिविर में पूज्य गुरुदेव कुछ समय तक उपस्थित रहेंगे। शिविर का संचालन कोई विशिष्ट सहायक आचार्य करें।

इस धम्मयात्रा में पूज्य गुरुदेव वहां के कुछ एक तीर्थ स्थलों पर भी जाकर ध्यान करना चाहेंगे, जिसमें विपश्यी साधक भी सम्मिलित हो सकते हैं। (तिथि अनुसार कार्यक्रम आगामी अंक में)

पूज्य गुरुदेव १३ मई, २००६ को श्रीलंका के लिए प्रस्थान करेंगे और लगभग एक सप्ताह बाद वापस लौटेंगे।

मंगल मृत्यु

★ रतलाम के सहायक आचार्य श्री सत्यनारायण शर्मा का ११ फरवरी को आकस्मिक निधन हो गया। शिविर से लाभान्वित होने के बाद वे वहां के जिप्सी शिविरों में मोद, मैत्री और करुणा के साथ लगभग २० वर्षों से सेवा दे रहे थे। सहायक आचार्य नियुक्त होने पर तो और विनम्रता के साथ सेवारत रहे। मृत्यु के समय शांतिपूर्वक, बिना बेहोश हुए अंतिम सांस छोड़ी।

★ विपश्यना विशोधन विन्यास में दीर्घकाल से सेवारत श्री भिकचंद जोशी ने अनेक शिविर किये और नियमितरूप से साधना करते हुए लगनपूर्वक अपने दैनिक कार्य निपटाते रहे। हृदयाघात के समय नाशिक के एक अस्पताल में मृत्यु के चंद क्षणों पूर्व धम्मगिरि के काम पूरा करने की बात करते-करते शांतचित्त से शरीर त्याग दिया।

इनकी धर्मसेवा से इनके साथ पूरे परिवार का बहुविधि मंगल हो!

धम्मगिरि पर विशिष्ट धर्मसेवकों की आवश्यकता

धम्मगिरि पर **ग्राफिक डिजाइनर, कोरल ड्रा** आदि में दक्ष कम्प्युटर के जानकार व्यक्ति अपनी सेवाएं दे सकते हैं।

विसुअल आर्टिस्ट, लैंडस्केप आर्कीटेक्ट, साइनबोर्ड मेकर्स, बागवानी और **सुरक्षा** जैसे कार्यों में दक्ष धर्मसेवक-धर्मसेविकाएं धम्मगिरि पर रह कर अथवा अपने घर से आ-जा कर अपनी सेवाएं देना चाहें (चाहे महीने में एकाध बार निरीक्षण के लिए ही सही) अपनी सेवाएं दे सकते हैं।

जिन्हें आवश्यकता होगी, आने-जाने के खर्च के साथ कुछ अतिरिक्त खर्च भी दिया जा सकता है। इन सब के लिए कृपया धम्मगिरि के व्यवस्थापक से संपर्क करें।

आस्था टी. वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों सहित इसका लाभ ले सकतेहैं।

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टीवी पर अब **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियोंको विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकतेहैं।

ग्लोबल पगोडा पर पूज्य गुरुजी के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर

१९ मार्च २००६ को होने वाले एक-दिवसीय शिविर के लिए ग्लोबल विपश्यना फाऊंडेशन असीम प्रसन्नता के साथ आपको आमंत्रित करता है। पू. गुरुजी इस शिविर के दौरान उपस्थित रहेंगे।

मुख्य पगोडा के **गुंबज के भीतर** यह पहला एक-दिवसीय शिविर होगा।

इस डोम को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए सारे प्रयत्न किये जा रहे हैं। केवल पत्थरों से बना हुआ तथा बिना किसी स्तंभ के आधार पर खड़ा हुआ यह विश्व का सबसे बड़ा डोम स्ट्रक्चर होगा। कृपया इस बात का ख्याल रखें कि १९ मार्च के पहले यह डोम पूरा नहीं होगा, परंतु निर्माण कार्य उस स्थिति तक अवश्य पहुँच चुका होगा जो साधकों को यह स्पष्ट कर देगा कि डोम पूरा होने के बाद किस तरह दिखेगा। जो भी साधक/साधिकाएंयहां ध्यान करते हैं वे इस ऐतिहासिक वास्तु के शुद्ध वातावरण का संवर्धन करतेहैं।

दिनांक : रविवार १९ मार्च २००६,

समयः सुबह ११:०० से सायं ५:००

स्थानः ग्लोबल पगोडा का **मुख्य गुंबज, धम्मपत्तन,** गोराई, मुंबई

मुंबई के बाहर से आने वाले साधकों/साधिकाओंसे निवेदन है कि अपने आने की पूर्व सूचना प्रबंधकर्ताओं को अवश्य दें ताकि आपके नहाने तथा नाश्ते आदि का प्रबंध किया जा सके ।

संपर्क : श्री डेरेक पेगाडो, फोन:०२२-२८४५२२६१, २८४५२१११

इस बात का ध्यान रखेंगे कि ग्लोबल पगोड़ा पर रात को रहने की व्यवस्था नहीं है। इसलिए जो साधक/साधिकाएंएक दिन पहले आना चाहते हैं उन्हें अपने रहने की व्यवस्था अन्य किसी स्थान पर करनी होगी।

दोहे धर्म के

जाति-वर्ण के नाम पर, फैला अत्याचार।
सदाचार गर्हित हुआ, पूजित मिथ्याचार॥
केवल मां की कोख से, पूज्य हुआ ना कोय।
सदाचरण में रत रहे, सही पूज्य है सोय॥
ऊंच नीच के भेद में, डूबा सकल समाज।
धर्मराज दुर्बल हुआ, सबल पाप का राज॥
जब जब मनुज समाज में, जाति प्रमुख हो जाय।
घोर पतन हो धर्म का, पाप प्रबल हो जाय॥
धन-संपद का, गोत्र का, कैसा चढ़ा गुमान!
शीलवान सत्पुरुष का, दुष्ट करे अपमान॥
जात-पांत के रोग से, हुआ हाल बेहाल।
व्याकुल ही व्याकुल रहा, अब तो होश संभाल॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जात-पांत अर गोत्र स्यूं, पूज्य हुवै ना कोय।
जो सद्गुण धारण करै, सही पूज्य है सोय॥
जात-पांत री कोढ़ मँह, बरण-गोत्र री खाज।
जन जन व्याकुल हो उठ्ये, दुखियो सकल समाज॥
ऊंच-नीच रै मोह स्यूं, जग्यो अंधविस्वास।
पाप-ताप फैल्यो इसो, हुयो धरम रो नास॥
टुकड़ा टुकड़ा मँह बँट्ये, बिखर्यो सुखी समाज।
खंड खंड भारत हुयो, हुयो पाप को राज।
जात-पांत बिसपान कर, खोया होस हवास।
मदहोसां आंधो र वै, जाग्यां जगै प्रकास॥
जात-पांत की मान्यता, ऊंच-नीच को भेद।
आकुल-व्याकुल ही र वै, दुख जागै अनमेद॥

देबेनरा मून्दड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४९, फाल्गुन पूर्णिमा, १४ मार्च, २००६**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **LII/RNP-WPP-03**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org